शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी.साहित्य का योगदान

यदुनंदन प्रसाद उपाध्याय (शोधार्थी)
जीवाजी विश्वाविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी भारत के केवल उत्तर भारत की ही नहीं अपितु एक विस्तृत भूमंडल, की मुख्य भाषा है। आधुनिक हिन्दी भाषा का विकास खड़ी बोली से हुआ है जो कि एक सीमित क्षेत्र की बोली थी। अपने इस सीमित क्षेत्र को फांदकर काव्य और जनसंचार की भाषा का रास्ता तय करके राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त करना एक अविस्मारणीय घटना है। भले ही मनुष्य अपनी आँचलिक बोली या विभाषा से प्रभावित रहता है, परन्तु जैसे ही वह खड़ी बोली से सम्पर्क में आया तो इसमें ही समा गया। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने मातृभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति कौ मूल'। अत: मनुष्य का सम्पूर्ण विकास मातृभाषा से ही संभव है। भले ही मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से हो जिसे बालक अपनी माँ द्वारा सीखता है ,परन्तु भारतेन्दु जी का मतलब दूसरा ही है। वे ऐसी भाषा के पक्षधर थे जो पूरे देश को आपस में समेटे हुए हो, जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की ही नहीं सम्पूर्ण देश की पीड़ा को उजागर करने की क्षमता हो और वह क्षमता केवल हिन्दी में ही है, जो कि भारत की राष्ट्रदभाषा है।

प्रस्तावना

भारत अनेक विदेशी शक्तियों से आक्रांत रहा। परन्तु यह अति दुर्भाग्य की बात है कि जो राष्ट्रीयता आधुनिक काल में अपने चर्मोत्कतर्ष पर थी, वही आदिकाल की समयावधि में होती तो शायद आज भारत की इतनी दुदर्शा नहीं होती। सम्पूर्ण आदिकाल राजा और सम्राटों के शौर्य की अतिशयोक्ति से भरा पड़ा है जिसमें स्वतंत्रता का अभाव है। भक्तिकाल जहां ईश्वरीय चिंतन, निराकार.साकार, द्वैत-अद्वैत इत्यादि भक्ति के सोपानों को साथ लेकर चल रहा था, वहीं दूसरी ओर रीतिकाल राजदरबारों और विलासिता के वैभव में डूबा रहा। अत: राष्ट्रीय चेतना का सर्वत्र ही अभाव रहा। हाँ, रीतिकाल में कुछ एक कवि ही हुए जिनकी वाणी वास्तव में स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता के स्वर से उद्वेलित थी। भूषण इसके प्रमाण हैं। वे छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल बुन्देला के राज्याश्रय में रहे। अनेक ओजपूर्ण कवित्त लिखकर उन्होंने शिवाजी और छत्रसाल महाराज की प्रशंसा की। सम्पूर्ण रीतिकाल में वास्तविक राष्ट्रीयता उनकी वाणी में ही हमें सर्वप्रथम दिखाई देती है।

जो रीतिकाल साहित्य काव्य लक्षणों की परिपाटी में बँधा हुआ था और काव्य भाषा राजदरबारों में शोभा पा रही थी वह अब तक नए रूप को धारण कर आधुनिक युग में परतंत्रता के अंधकार में मशाल का रूप धारण कर चुकी थी। ऐसे में भारतेन्दु हरिशचंद्र जी का प्रादुर्भाव एक अद्वितीय घटना साबित हुई। केवल 35 वर्ष की अल्पतम आयु में विपुल साहित्य का सृजन कर वे हिन्दी भाषा की महान सेवा कर गए।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र कवि की प्रतिभा लेकर अवतरित हुए थे। उनके पिता भी कवि थे। जिन्होंने नहुष नामक गीति नाट्य ब्रज भाषा में लिखा। भारतेन्दु ने कवि वचन सुधा (1868) ,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हरिश्चन्द्र मैंगजीन (1873), बाला बोधनी (1874) नामक तीन पत्रिकायें निकाली जो साहित्यिक दृष्टि से तो सफल थी ही स्वाधीनता की चेतना के लिये भी उर्वर भूमि साबित हुई। उन्होंने जहां एक ओर 'अंधेर नगरी' प्रहसन लिखकर भारतीय जनता को अंग्रेजों की लम्पटता और अयोग्यता से परिचित कराया वहीं दूसरी ओर 'भारत दुर्दशा' नाटक में भारतीय समाज और संस्कृति के विघटित रूप और दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। भारतेन्दु मंडल के अन्य सशक्त कवियों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र प्रेमघन, ठाकुर जगमोहन, अम्बिकादत्त व्यास इत्यादि का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने अपनी बुद्धि कुशलता और वाकपटुता से साहित्य का अवलम्बन लेकर भारतीय जनता को स्वाधीनता संग्राम में समर्पित होने के लिये प्रेरित किया। प्रताप नारायण मिश्र ने अपनी विनोदमयी शैली से और बालकृष्ण भट्ट ने अपनी गम्भीर लाक्षणिक शब्द.शैली से भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी भाषा को औजार बनाकर ब्रिटिश हुकूमत पर अनेक करारे व्यंग्यात्मक प्रहार किये। भारतेन्दु जी का सम्पूर्ण मण्डल हिन्दी साहित्य का सच्चा साधक साबित हुआ। प्रत्येक कवि किसी न किसी पत्र.पत्रिका का सम्पा्दक था। इन पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा को अपना माध्यम बनाकर ब्रिटिश हुकूमत के पंखों को काट दिया। जनमानस में क्रांति की लहर गूंज उठी। राष्ट्रीयता की भावना गति पकड़ने लगी। अंग्रेजों की शोषण.नीति का भारतेन्दु द्वारा प्रत्यक्ष उल्लेख इस भावना की चरम परिणति है:.

भीतर.भीतर सब रस चूसैए हँसि.हँसि के तन.मन.धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज क्यों सखि सज्ज न नहिं अंगरेज।।1

वास्तव में भारतेन्दु की राष्ट्रीय.चिंतनधारा के दो पक्ष हैं. देशप्रेम और राजभक्ति और दोनों पक्षों में इस युग के कवियों ने हिन्दीग भाषा का अवलम्बो लेकर राष्ट्री यता की चिंगारी को व्या पकता दी। प्रथम पक्ष के अंतर्गत उन्होंने हिन्दी.हिन्दू हिन्दुतस्तान का गुणवान किया। तो दूसरे पक्ष में जजिया जैसा कर न लगाने वाले अंग्रेजों के शासनकाल में प्रजा मात्र की सुख समृद्धि की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उनके इस मुक्त कंठ के तीव्र स्वर का वास्तविक प्रवाह हिन्दी ने ही धारण किया। सुविधाओं से लाभ उठाने के लिए उन्होंने जनता से रूढ़िवादी प्रभावों से मुक्त होने का आग्रह किया और शासन के प्रति सहयोगी रूख अपनाने की प्रेरणा दी।

सन 1857 के प्रथम महासंग्राम में भले ही भारत को पराजय का मुख देखना पड़ा परन्तु उसके फलस्वरूप मिली व्यापक राष्ट्रीयता की भावना ने संपूर्ण भारत वर्ष के दिलों मे जो प्रीति की लहर जागृत की वह एक महान उपलब्धि साबित हुई। ऐसे में हिन्दी की पूछ-परख बढ़ना स्वाभाविक था। भारतेन्दु और उनके मण्डल के कवियों की वाणी का रूप धारण कर हिन्दी भाषा भारत के कोने-कोने में फैलती चली गई । सन् 1854 में श्यारमसुन्दर सेन ने कलकत्ता में समाचार सुधावर्षण नामक प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र निकाला जो अपनी लोकप्रियता के कारण साहित्य और समाज का अभिन्न अंग बना रहा।

स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी को सशक्त रूप द्विवेदी युग (1900-1920) में प्राप्त हुआ। राष्ट्रीयता के जो बीज भारतेन्दु युग मे परतंत्रता की भूमि में हिन्दी भाषा ने बोए थे, वे द्विवेदी युग में आकर व्यापक राष्ट्री य भावना की फसल के रूप में लहलहाने लगे। सन् 1900 में चिन्तामणि घोष और उनके सहयोगियों द्वारा

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काशी से सरस्वती नामक साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रिका निकाली। जिसे साहित्यिक दृष्टि से सशक्त बनाने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही जाता है। उन्होंने सन् 1903-1920 तक निष्पक्ष और निष्काम भाव से सरस्वती के माध्यम से हिन्दी भाषा की उत्कृष्ट सेवा की सरस्वती के सम्पादक के रूप मे इन्होने हिंदी भाषा और साहित्य के उत्थान के लिए जो कार्य किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। इनके प्रोत्साहन ओर मागदर्शन के फलस्वयरूप कवियों ओर लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण हुआ। खड़ी.बोली को परिष्कार तथा स्थिरता प्रदान करने वालों में ये अग्रगण्य है। एक ओर द्विवेदी जी ने हिन्दी की साहित्यिक और व्याकरणिक शुद्धता तथा परिष्कृतता पर बल दिया तो दूसरी ओर स्वाधीनता संगाम में हिन्दी भाषा को जनसंचार का माध्यम बनाकर बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए लोगों का पथ प्रदर्शन भी किया।

द्विवेदी युग में खड़ी.बोली गद्य और पद्य दोनों की भाषा बन गयी थी। भक्ति.काल और रीति.काल में जो ब्रजभाषा काव्यी के सिंहासन पर रूढ़ासीन थीए वो द्विवेदी युग में आकर वह साहित्येकारों के मानस.पटल से निष्कासित हो गयी। कारण कई रहेए परन्तुद प्रमुखता खड़ी बोली के प्रति यकायक रूचि पनपने को ही दी जा सकती है। राज्यातश्रित काव्यख सृजन से साहित्यकारों को मन ऊब चुका था और ऐसे में भारतीय स्वाधीनता की लहर का तीव्रगामी स्वर लेखकों और कवियों को कुछ अलग करने के लिए प्रेरित करता रहा फलस्वखरूप काव्य का प्रमुख विषय समाज में व्यंग्य, असंतोष और राष्ट्रीयता की भावना बन गया। द्विवेदी युग के अन्य प्रमुख कवियों मे नाथुराम शर्मा शंकर श्रीधर पाठक, हरिऔध, रायदेवी प्रसाद पूर्ण रामचरित उपाध्याय स्नेही, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, रूपनारायण पाण्ड्ेय इत्यादि के नाम सम्मान से लिए जा सकते हैं। नाथूराम शर्मा शंकर पर आर्य.समाज तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलनों का गहरा प्रभाव पड़ा। देश.प्रेम स्वदेशी.प्रयोग समाज.सुधार और ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों पर इन्होंने बड़े तीखे व्यंग्य.किये हैं।

द्विवेदी युग के सबसे महान प्रतिभा.सम्पन्न.कवि मैथिलीशरण गुप्त थे, जो कि पहले ब्रज भाषा में काव्य रचना करते थे, बाद में आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा से खड़ी बोली में साहित्य सृजन करने लगे। सन् 1915 में महात्मा गांधी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महानायक के रूप में उभरकर सामने आए। सत्य और अहिंसा की साक्षात् प्रतिमा कहे जाने वाले महात्मा गांधी की विचाराधारा ने भारत की राजनीति को ही नहीं अपितु साहित्य और समाज को भी प्रभावित किया। मैथिलीशरण गुप्त गांधी विचारधारा के ही महान कवि हुए। उनका प्रथम काव्य ग्रंथ 'जयद्रथ वध' सन् 1910 में प्रकाशित हुआ, जो कि खण्डकाव्य था। गुप्त जी की प्रसिद्धि का प्रमुख कारण सन् 1912 में प्रकाशित उनकी महान कृति भारत.भारती थी, जिसने समसामयिक राष्ट्रीय.चेतना को काफी हद तक प्रभावित किया। स्वाधीनता संग्राम और महात्मा गांधी की विधाराधारा को सशक्त बनाने में भारत भारती का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। शासकीय और अशासकीय कार्यालयों तथा स्कूलों में भारत भारती की कुछ पंक्तियों को प्रार्थना और अभिवादन के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। इसकी उपलब्धि केवल गुप्त जी को ही नहीं सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुई। अनेक लेखक और कवियों को राष्ट्रीय चेतना जागृति

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हेतु इस उपलब्धि से उत्कृष्ट साहित्य को सृजन की प्रेरणा मिली। गुप्त जी कवि को सार्थक कर्म के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं

केवल मनोरंजन कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

क्योंउ आज रामचरितमानस सब कहीं सम्मा न्यत है
सत्काउव्यज युत उसमें परम आदर्श का प्राधान्य है।2

हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदी युग के पश्चात् की काव्यधारा अन्य विचारधाराओं से प्रेरित होती हुई दिखाई देती है। साहित्य एक तिराहे पर खड़ा नजर आता है, जहां एक मार्ग पर छायावाद दूसरे पर हालावाद और तीसरे पर राष्ट्रीय काव्यधारा चलती हुई दिखाई देती है। छायावाद और हालावाद व्यक्ति केन्द्रित थे, जबकि राष्ट्रीय काव्यधारा राष्ट्र केंद्रित थी। जहां एक ओर छायावादी कवि प्रकृति का अवलम्ब लेकर अज्ञात सत्ता् के प्रति आत्मानुभूति और रहस्यवाद का परिसंचालन करते रहे वहीं दूसरी ओर हालावाद शराब के नशे में उन्मत्त व्यक्ति के बावलेपन को मुखरित करता रहा। भले ही छायावाद मे न्यूनांश भक्तिकाल की छटा हो फिर भी उसमें राष्ट्रीयता और सामाजिकता का अभाव ही है। चूंकि मेरा लक्ष्य स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका को दृष्टि करना है। इसलिए साहित्यिक युगों और कालों पर तर्क दृवितर्क करना उचित प्रतीत नहीं होता।

राष्ट्रीय काव्य धारा की समयावधि भारतीय जीवन के लिए विषम संघर्ष की समायावधि रही है। देश ऐसे साम्राज्यवादियों के चंगुल में फँसा हुआ था, जिनकी शासन.पद्धति प्राचीन काल के विदेशियों से मुख्यतया भिन्नम थी। अंग्रेजों से पहले जितने भी विदेशी आक्रमणकारी यहां आये वे या तो लूटमार कर के वापस चले गये या फिर देश के ही होकर रह गये। निस्संदेह वे अपने वर्ग या धर्म पर आस्था रखने वालों को अधिक सुविधाए देते थे और दूसरे धर्मों के लोगों को वैसी समानता का अधिकार नहीं मिल पाता था, फिर भी वे इस देश में रहते हुए भी यहाँ के निवासी नहीं बने। उनका उद्देश्य था. इस देश का शोषण कर अपने देश की श्रीवृद्धि करना। इसलिए उनके प्रति आक्रोश होना स्वाभाविक ही था।

यह आक्रोश धीरे.धीरे बढ़ता हुआ स्वाधीनता.संग्राम के रूप में फूट पड़ा और महात्मा गांधी के नेतृत्व़ में आजादी का संघर्ष एक नए रूप में अहिंसा और सत्य पर आधारित असहयोग के रूप में हमारे सामने आया। इस युग के राष्ट्रीय.सांस्कृतिक काव्य में दो भावनाएं पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुईं एक ओर तो कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश का आह्वान किया तो दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता.संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन और सुभद्रा कुमारी चौहान ने केवल राष्ट्रप्रेम को ही मुखरित नहीं किया अपितु उन्होंने स्वयं देश की आजादी की लड़ाई में भाग भी लिया । फलस्वरूप उनकी देशप्रेम की कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश दिखाई देता है। उदाहरणार्थ माखनलाल चतुर्वेदी ने कैदी और कोकिला शीर्षक कविता में अपनी अनुभूति को ही एक उच्चत्तर और लोक सामान्य भावभूमि के स्तर पर व्यक्त करने का प्रयास किया है:

क्या देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकड़ियाँ क्यों यह ब्रिटिश राज्य का गहना

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कोल्हू का चर्र चूं जीवन की ताव
गिट्टी पर लिक्खे अंगुलियों ने गान
हूं मोट खींचता लगा पेट पर जुऑं
खाली करता हूं ब्रिटिश अकड़ का कुआं।3

इन पंक्तियों में ब्रिटिश साम्राज्यावाद के विरोधी किसी भी ऐसे व्यकक्ति की आवाज सुनी जा सकती है जिसे आजादी के लिए संघर्ष करने के जुर्म में कैद किया गया हो। इस काल में देश के सर्वमान्य नेता थे. महात्मा गांधी। इसलिए स्वाभाविक ही है आजादी के भावों से भरी कविता में गांधी दर्शन का प्रभाव दिखायी दे। युगों से शोषित भारतीय जनता को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के साथ संघर्ष के लिए प्रेरित करना कोई आसन काम नहीं था। जनमानस में जागरण और संघर्ष के भावों का संचार करने के लिए कवियों ने हिन्दी भाषा को ओजस्वी माध्यम बनाकर जनता को प्रमुख रूप से यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति असीम शक्ति से सम्पन्न है आवश्यकता इस बात की है वह इसे पहचाने और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाए। नवीन ने इन पंक्तियों में चिरदोहित और भिखमंगे भारत को जगाने का प्रयास किया है :

ओ भिखमंगे अरे पराजित ओ मजलूम अरे चिरदोहित
तू अखंड भण्डार शक्ति का जाग अरे निद्रा.सम्मोहित!
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल.थल भर दे
अंगारों के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।4

जनता में आत्मविश्वास का संचार करने का दूसरा माध्यम उसे अतीत की गरिमा से परिचित कराना था। आज का भारत इतना विकसित हो चुका है कि वह अपनी वास्तविकता और मूल संस्कृति को विस्मृत कर चुका है। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि अरविंद, महात्मा गांधी इत्यादि ने प्राचीन सिद्धांतों को ग्रहण कर उन्हें युगानुरूप बदलकर जनमानस में नई चेतना का विकास किया। यह सारा प्रयास वास्तव में प्राचीन भारतीय परपंरा में उन मूल्यों की खोज का प्रयास था, जो आज के युग.जीवन के लिए सार्थक और उपयोगी सिद्ध हो सके। अतर: इन राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन, हरिश्चन्द्र, इत्यादि युगपुरूषों के चरित्रों के उदाहरण देकर जनता में विश्वास और आस्था पैदा करने का प्रयास किया। सियाराम शरण गुप्ता की बापू कविता की ये पंक्तियॉ देखिए

प्राप्त इसे दूर के अतल से सत्य हरिशचंद्र की अटलता
लब्धा इसे ताराग्रह मंडल से श्री प्रहलाद की अनंत भक्ति समुज्जवलता
क्रुद्ध कुरूक्षेत्र के समर में साधा है अकाम ज्ञान कर्मयोग इसने
पुण्य पांचजन्य स्वर में जीवन का पाया है अमर योग इसमें।5

निराला ने भी दिल्ली कविता में देश के अतीत के गौरव के साथ वर्तमान दुर्दशा का चित्रण कर एक गम्भीर प्रभाव की अभिव्यक्ति की है:.

क्या यह वही देश है.
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहॉ के वायुमण्डल में
उज्जवल अधीर और चिरनवीन 6

जीवन के चौमुखी विकास के लिए आध्यात्मिकता और सामाजिकता का समन्वय अनिवार्य है। आधुनिककाल में जनमानस का दृष्टिकोण यथार्थवादी होने लगा। आदर्शवाद और परम्पराओं

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का जो चोला भारतीय समाज धारण किये हुए था उसे राष्ट्रीय चेतना के कवियों ने उतरवाकर फिकवा दिया। ईश्वर की वास्तविक सत्ता निर्धारण रामनरेश त्रिपाठी निम्न शब्दों में करते हैं:.

मेरे लिये खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू

मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।7

स्वाधीनता संग्राम की कई रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से देश की स्वाधीनता की माँग का समर्थन किया गया। स्वाधीनता संग्राम के दौरान प्रयोग में लाई गई हिन्दी की रचनाओं में कवित्व की अपेक्षा उपदेश का भाव अधिक था। अनेक कवियों और लेखकों ने खड़ी बोली का माध्यम लेकर बड़ा ही गम्भीर और मार्मिक साहित्य का सर्जन किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान स्वाधीनता संग्राम में एकमात्र हिन्दी की ऐसी सेविका थी जिन्होंने अपनी ओजपूर्ण लेखनी से तत्कालीन साहित्य जगत को काफी हद तक प्रभावित किया। उन्होंने असहयोग और बलिदान की प्रेरणा देते हुए कहा है :

विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र पाप से असहयोग ले ठान।

गुंजा डालें स्वराज्य की तान और सब हो जाय बलिदान।।8

कवयित्री के ओजपूर्ण भावों का संचार उनकी एक अन्य कविता झांसी की रानी में भी बड़े हृदयस्पर्शी ढंग से दिखाई देता है। राष्ट्र की वेदी पर न्यौछावर होकर अमरत्व को प्राप्त करना इनकी रचनाओं का मूल क्रांतिकारी स्वर था। नवीन ने भी देश के युवकों को स्वातंत्रता की बलिवेदी पर मर.मिटने के लिए प्रेरित किया है :.

है बलिवेदी सखे प्रज्ज्वलित माँग रही ईधन क्षण.क्षण।

आओ युवक लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन।9

किन्तु यह भाव विरल ही है प्रधानता असहयोग और आत्मबलिदान के भावों की ही है। इस काव्ययधारा की अनेक रचनाओं में स्वाधीनता संग्राम में सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये प्रेरित किया है। अत: स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी भाषा का अवलंब लेकर अपने भावों से राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने जिस बगीचे का निर्माण किया उसका एक-एक फूल क्रांति की सुगंध लेकर देश की स्वरतंत्रता प्राप्ति तक बड़े ही मोदक रूप में महकता रहा।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के पश्चात भारत की राजनैतिक स्थिति में एक विशेष परिवर्तन आया। इसने भारतीय राष्ट्रीयता के क्षेत्र में नवचेतना का संचार कियाए परिणामस्वरूप युद्धकाल में साम्राज्यवादियों के अंतर्द्वंद्वों से लाभ उठाकर देश एवं विदेशों में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध सशक्तध विद्रोह क्रांतिकारियों ने किया तो दूसरी ओर कांग्रेस ने मेल.मिलाप की नीति अपनायी और युद्ध में ब्रिटिश शासन को भरपूर सहयोग मिला। ऐसे में जनजाग्रति का बीड़ा साहित्यतकारों और आंदोलनकारियों के अलावा कौन उठा सकता था हिन्दी भाषा इस वातावरण में जनसंचार का माध्यम बनी और अपनी गम्भीर सारग्रहिता के कारण स्वतंत्रता संग्राम में जनता को राष्ट्रीयता के वास्तविक पथ पर अग्रसर करती रही।

यद्यपि पद्य मर्म का माध्याम है। परन्तु गद्य की व्यापकता उसे वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तीनों अर्थ प्रदान करती हैं जबकि पद्य अधिकांश लाक्षणिक शब्दाशक्ति का द्योतक होता है। भारतेन्दु युग में जिस गद्य का सूत्रपात

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हुआ था वह भी अपने में सीमित न हो कर विस्तृत हो गया। भारतेन्दु मण्डल के सभी कवि और लेखकों ने गद्य में भी अपनी प्रतिभा को माँजकर साहित्यर साधना का श्रीगणेश किया। परन्तुर व्यापक राष्ट्रीयता के दर्शन हमें छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों में भी होते हैं। प्रसाद जी रोमानी प्रकृति के साहित्यकार थे। अत: उन्होंने देश के गौरवमय अतीत को अपने नाटकों का विषय बनाकर ऐतिहासिक नाटकों का सूत्रपात किया। जिनमें भारतीय इतिहास की गौरवमयी झाँकी देखने को मिलती है। शायद ही हिन्दी के किसी अन्य लेखक ने भारतीय संस्कृति समृद्धि शक्ति और औदात्य का ऐसा भास्वर चित्र प्रस्तुत किया है। इन नाटकों में जिस राष्ट्रीय भावना को प्रसाद जी ने उठाया है, वह स्वतंत्रता संग्राम की जनता के हृदय में स्वाधीनता के प्राण फूँकने के लिए पर्याप्त सिद्ध होती है। उन्होंने कई ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं, जिनमें से अधिकांश नाटकों की विषयवस्तु राष्ट्रीयता से ओत.प्रोत है। विशाख, अजातशत्रु, कामना, राजश्री, एक घूँट, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, और ध्रुवस्वामिनी आदि उनके प्रमुख नाटक है। जिनमें से स्कंदगुप्त और चंद्रगुप्त में संपूर्ण कथावस्तु राष्ट्रीयता की भावना से भरी हुई है। चंद्रगुप्त नाटक के माध्यम से प्रसाद जी निम्न पंक्तियों में अपनी राष्ट्रीय भावना को प्रस्तुत करतें हैं :

हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती।10

स्वांधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य ने कथा साहित्य के माध्यम से जो राष्ट्रीय जागरण पैदा किया है वह भी अविस्मरणीय है।

मुंशी प्रेमचंद यद्यपि राष्ट्र प्रेम और देशभक्त लेखक थे। परन्तु अपने उपन्यासों में वे राष्ट्रीय भावना को सशक्त अभिव्यक्ति न दे सके। जगह-जगह पर ऐसा लगता है कि वे इस ओर बढ़ना तो चाहते हैं, पर उनकी व्यावहरिक बुद्धि जैसे रास्ता रोक देती है। परन्तु समाज की विसंगतियों का खुला चित्रण करते हुए जगह.जगह पर सत्याग्रह आन्दोलनों या स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त किये गये आन्दोलनों के चित्रण भी उनके उपन्यासों में यत्र-तत्र दिखायी देते हैं, जो तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम के भी दर्शन कराते हैं। प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन और कर्मभूमि में उनकी इसी व्यापक राष्ट्रीयता को देखा जा सकता है। प्रेमचंद युग निर्माता थे । प्रारंभ में वे उर्दू में लिखते थे परन्तु हिन्दी को व्यापकता प्रदान करने की स्मृति ने उन्हें व्यावहारिक खड़ी बोली में साहित्य सृजन की प्रेरणा दी।

प्रेमचंदोत्तर काल में भी हिन्दी भाषा अपने व्यापक दृष्टिकोण और गंभीर परिप्रेक्ष्य को धारण किए रही। अनेक लेखकों और कवियों ने अपनी बुद्धि कुशलता से जनमानस के हृदय में परतंत्रता के प्रति आक्रोश का संचार किया। गांधीजी ने अपने आन्दोलनों के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व किया और जनसंचार के लिए हिंदी या हिंदूस्तानी भाषा को चुना।

आदिकालीन कवि अमीर खुसरो पहले से ही हिन्दी भाषा की व्यापकता की उदघोषणा कर चुके थे। अत: उन्होंने कहा था कि भविष्य में हिन्दी की तूती बोलेगी और हुआ भी यही। तूती.ए.हिन्द की वाणी सार्थक हुई। आधुनिक युग में जनचेतना के लिए हिन्दी भाषा से अच्छा माध्यम कोई दूसरा साबित न हो सका। सन् 1857 की क्रांति में मिली असफलता ने भारतीय जनमानस में विद्रोह की चिनगारी सुलगा दी थी। जो समय-

समय पर उग्र रूप धारण कर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ फूटती रही।

इस प्रकार अनवरत रूप से भारत की स्वरतंत्रता तक अनेक साहित्यिक रचनाओं और पत्र-पत्रिकाओं ने देश प्रेम की भावना को जागृत किया। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया। इस अवधि में हिन्दी के पुराधाओं ने जन-जन तक अपने विचार पहुँचाये। हिन्दी भाषा ने इनकी वाणी का रूप धारणा किया और स्वाधीनता संग्राम में अपनी चिरस्मरणीय भूमिका का निर्वहन किया, जो सदैव शाश्ववत रहेगी।

रामधारी सिंह दिनकर ने विपथगा में लिखा है :.

डरपोक हुकूमत जुल्मों से लोहा जब नहीं बजाती है

हिम्मत वाले कुछ कहते हैं तब जीभ तराशी जाती है

डलती चालें यह देश.देश में हैरत.सी छा जाती है

भट्ठी की ओरी ऑंच छिपी तब और अधिक धुंधाती है।11

संदर्भ ग्रंथ

1 हिंदी का इतिहास ;डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ क्रमांक 440

2 भारत.भारती, ;मैथिलीशरण गुप्ता

3 कैदी और कोकिला; माखनलाल चतुर्वेदी

4 बालकृष्ण शर्मा नवीन कविता संग्रह

5 बापू; सियारामशरण गुप्त

6 निराला कविता कोश

7 हिंदी का इतिहास; डॉ. नगेन्द्र, पृ क्रमांक 521

8 वही पृष्ठ. क्रमांक 522

9 वही पृष्ठ क्रमांक.522

10 चंद्रगुप्तत; प्रसाद

11 विपथगा.दिनकर